नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मोहब्बत की वास्तविकता

[हिन्दी – Hindi – هندي]

डा. अबू सुहैब अल-रहवानी

अनुवाद : **अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह**

2013 - 1434

IslamHouse.com

حقيقة حب النبي ﷺ

« باللغة الهندية »

د. أبو صهيب الرهواني

ترجمة : عطاء الرحمن ضياء الله

2013 - 1434

IslamHouse.com

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) केवल अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ़्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत प्रदान करदे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मोहब्बत की वास्तविकता

हमारे महान संदेष्टा पर आक्रमण के बाद, पूरी दुनिया में मुसलमानों की भावनाएं उत्तेजित हो गईं और इस अत्याचारी व अन्यायिक आक्रामक व्यवहार के प्रति अपने आक्रोष, क्रोध और अस्वीकृति व्यक्त करने लगीं, यह एक क्रान्ति है जो मूलतः मुसलमानों के अपने सम्मानित पैगंबर से मोहब्बत रखने के परिणाम स्वरूप पैदा हुई है। यह एक सराहनीय चीज़ है, परंतु इस मोहब्बत की जाँच परख करने और इसकी वास्तविकता पर चिंतन करने से यह स्पष्ट होता है कि यह अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँचती है। हम इस पुस्तिका में इसी चीज़ को वर्णन करने का प्रयास कर रहे हैं :

सर्व प्रथम : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मोहब्बत अनिवार्य है

हमें शुरू में इस बात को बयान करने दीजिए कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मोहब्बत अन्य किसी भी

व्यक्ति से मोहब्बत के समान नहीं है। जी हाँ, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मोहब्बत एक महान इबादत (उपासना) है जिसके द्वारा हम अल्लाह सर्वशक्तिमान की उपासना व आराधना करते है, और एक निकटता का काम है जिसके माध्यम से हम अल्लाह की निकटता तलाश करते हैं, तथा इस्लाम धर्म के सिद्धांतों में से एक बड़ा सिद्धांत और ईमान के आधारों में से एक मौलिक आधार है, जैसाकि अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿النَّبِيُّ أَوْلَى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ﴾ [**الأحزاب** : ٦]

''पैगंबर ईमानवालों पर स्वयं उनकी जानों से अधिक अधिकार रखते हैं।'' (सूरतुल अहज़ाब : 6)

और जैसाकि अल्लाह के सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है :

"والذي نفسي بيده لا يؤمن أحدكم حتى أكون أحب إليه من نفسه وماله وولده والناس أجمعين". [البخاري]

''उस अस्तित्व की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, तुम में से कोई व्यक्ति उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके निकट उसके माता पिता, उसके बाल बच्चों और तमाम लोगों से अधिक प्रिय न हो जाऊँ।'' (बुखारी)

तथा सहीह बुखारी ही में है कि उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक दिन अल्लाह के पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि : ऐ अल्लाह के रसूल! मेरी जान के सिवाय आप मुझे हर चीज़ से अधिक प्रिय हैं, तो पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''नहीं, उस अस्तित्व की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है यहाँ तक कि मैं तुम्हारे निकट तुम्हारी जान से भी अधिक प्रिय हो जाऊँ।'' उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा : (यदि ऐसी बात है तो) अब आप – अल्लाह की क़सम! – मुझे मेरी जान से भी अधिक प्यारे हैं। इस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''ऐ उमर अब (बात बनी)।'' (बुख़ारी)

अतः नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मोहब्बत कोई द्वितीय (मामूली) चीज़ या ऐच्छिक मामला नहीं है कि यदि

आदमी चाहे तो आप से मोहब्बत करे और चाहे तो मोहब्बत न करे, बल्कि यह हर मुालमान पर अनिवार्य है और ईमान के मूल तत्वों में से है, और इस मोहब्बत का किसी भी अन्य मोहब्बत से अधिक मज़बूत होना ज़रूरी है, चाहे वह आदमी की अपनी जान से मोहब्बत ही क्यों न हो।

हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मोहब्बत क्यों करते हैं ?

दूसरा : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मोहब्बत के कारण

1– अल्लाह सर्वशक्तिमान की इच्छा की उसकी मोहब्बत में अनुकूलता

जब अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अल्लाह के निकट लोगों में सबसे अधिक प्रिय हैं, चुनाँचे अल्लाह तआला ने आपको खलील (मित्र) बनाया है और आप की ऐसी सराहना व प्रशंसा की है जो किसी अन्य की प्रशंसा नहीं की

है। इसलिए हर मुसलमान के लिए अनिवार्य है कि वह उससे मोहब्बत करे जिससे अल्लाह तआला मोहब्बत करता है, और यह अल्लाह सर्वशक्तिमान की मोहब्बत का पूरक है।

2– ईमान का तक़ाज़ा (अपेक्षा) :

अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस बात को स्पष्ट करते हुए कि ईमान के तक़ाज़े में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मोहब्बत करना, आपका आदर और सम्मान करना है, फरमाया :

"والذي نفسي بيده لا يؤمن أحدكم حتى أكون أحب إليه من نفسه وماله وولده والناس أجمعين". [البخاري]

''उस अस्तित्व की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, तुम में से कोई व्यक्ति उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके निकट उसके माता पिता, उसके बाल बच्चों और तमाम लोगों से अधिक प्रिय न हो जाऊँ।'' (बुखारी)

3– नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उत्कृष्टि विशेषताए :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों में सबसे बड़े सज्जन, सबसे अधिक दानशील, सबसे बड़े पवित्र और हर चीज़ के अंदर लोगों में सबसे महान थे, और ये सब के सब इस बात के कारण हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगो में सबसे अधिक प्रिय और चहेते हों।

4– आपका अपनी उम्मत से सख्त मोहब्बत, और उसपर दया व करूणा करना :

जैसा कि आपके पालनहार ने आपकी विशेषता का वर्णन करते हुए फरमाया :

﴿لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَؤُوْفٌ رَحِيْمٌ﴾ [التوبة : ١٢٨]

“तुम्हारे पास एक ऐसे पैग़म्बर आए हैं जो तुम्हारी ही जिन्स से हैं, जिन को तुम्हारे हानि की बात बहुत कठिन लगती है,

जो तुम्हारे लाभ के बड़े इच्छुक रहते हैं। ईमान वालों के साथ बड़े ही दयालु और मेहरबान हैं।'' (सूरतुत तौबा : 128)

इसीलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी दुआ की कुबूलियत को कल क़ियामत के दिन अपनी उम्मत की सिफारिश के लिए विलंब कर दिया।

5– अपनी उम्मत को निमंत्रण देने और लोगों को अंधेरे से निकालकर प्रकाश की ओर लाने में आपका महा प्रयास करना।

तीसरा : आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मोहब्बत के प्रमाण और आपके सम्मान के प्रदर्शन

1– नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हर एक पर प्राथमिकता देना :

अल्लाह सर्वशक्तिमान ने फरमाया :

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ﴾ [الحجرات :١]

ऐ ईमान वालो! आल्लाह और उसके पैगंबर के आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरते रहो, निःसंदेह अल्लाह तआला सुनने वाला जानने वाला है।''

तथा अल्लाह सर्वशक्तिमान ने फरमाया :

﴿قُلْ إِن كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَآؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَاكِنُ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُم مِّنَ اللّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُواْ حَتَّى يَأْتِيَ اللّهُ بِأَمْرِهِ وَاللّهُ لاَ يَهْدِى الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ﴾ [التوبة:٢٤]

"आप कह दीजिए कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे लड़के और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारे कुंबे क़बीले और तुम्हारे कमाए हुए माल और वह तिजारत जिसके मंदा पड़ने से तुम डरते हो और वह हवेलियाँ जिन्हें तुम पसंद करते हो, अगर यह सब तुम्हें अल्लाह से और उसके रसूल से और उसकी राह में जिहाद से भी अधिकतर प्रिय हैं तो तुम प्रतीक्षा करो कि अल्लाह तआला अपना अज़ाब ले आए, अल्लाह तआला फासिक़ो (पापियों) का मार्गदर्शन नहीं करता"। (सूरतुत्–तौब : 24)

तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मोहब्बत का चिन्ह यह है कि आप पर किसी चीज़ को प्राथमिकता न दी जाय चाहे वह कितनी ही महान हो।

2- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ अदब (शालीनता व सभ्यता) से पेश आना

और यह निम्नलिखित बातों के द्वारा संपन्न होता है :

- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्रशंसा व सराहना करना, जैसाकि अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيماً ﴾ [الأحزاب:٥٦]

"नि:सन्देह अल्लाह तआला और उसके फरिश्ते पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर दुरूद भेजते हैं, ऐ ईमान वालो! तुम भी उन पर दुरूद भेजो और खूब सलाम भेजते रहा करो।" (सूरतुल अहज़ाब : 36)

- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चर्चा करते समय शालीनता का प्रदर्शन करना इस तरह कि आपका चर्चा मात्र आप के नाम से न किया जाए बल्कि नुबुव्वत या

रिसालत के साथ किया जाए (अर्थात आपका चर्चा नबी या रसूल के शब्द के साथ किया जाए), जैसाकि अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا﴾ [سورة النور : ٦٣]

''तुम आपस में रसूल के बुलाने को इस तरह का बुलाना न समझो जिस तरह कि तुम एक दूसरे को बुलाते हो।'' (सूरतुन नूर : 63).

सईद बिन जुबैर और मुजाहिद कहते हैं : इसका मतलब यह है कि तुम विनम्रता और कोमलता के साथ ऐ अल्लाह के रसूल! (ऐ अल्लाह के पैगंबर!) कहो, कठोरता के साथ हे मुहम्मद! न कहो। तथा क़तादा ने फरमाया : अल्लाह ने उन्हें आदेश दिया है कि वे आपका मान सम्मान और आदर करें।

- आपकी मस्जिद में, इसी तरह आपकी क़ब्र के पास शालीनता अपनायी जाए, शोर मचाने और आवाज़ बुलंद करने से बचा जाए।
- आपकी हदीस का सम्मान किया जाए, तथा उसे सुनने के समय और उसके अध्ययन (पठन पाठन) के समय सभ्यता

और शालीनता से काम लिया जाए, जिस तरह कि इस उम्मत के पूर्वज और उसके विद्वान नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस का सम्मान किया करते थे। चुनांचे इमाम मालिक जब हदीस का पाठ कराने के लिए अपनी सभा में पधारना चाहते तो नमाज़ के लिए वुज़ू करने के समान वुज़ू करते, अपने अच्छे कपड़े पहनते, सुगंध लगाते, और अपनी दाढ़ी में कंघी करते थे। तो उनसे इस बारे में बात की गई तो उन्हों ने उत्तर दिया : मैं इसके द्वारा अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस का सम्मान करता हूँ।

तथा सईद बिन मुसैयिब बीमारी की हालत में होने के बावजूद कहते थे कि मुझे उठाकर बैठाओ क्योंकि मैं लेटे हुए पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस को बयान करने को बड़ी बात समझता हूँ।''

3– आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिस चीज़ की सूचना दी है उसकी पुष्टि करना :

यह ईमान के मूल सिद्धांतों और उसके मूल तत्वों में से है, और इस अध्याय में साक्ष्यों में से अबू बक्र रज़ियल्लाहु

अन्हु का सिद्दीक़ के लक़ब से सम्मानित किया जाना है, चुनाँचे उर्वा से वर्णित है, वह आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने फरमाया :

जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रातों रात मस्जिदुल अक़्सा ले जाया गया, तो लोग इसके बारे में बातें करने लगे, चुनांचे जो लोग आप पर ईमान लाए थे और आपकी पुष्टि की थी, उन्हों ने जब इसे सुना तो उनमें से कुछ लोग अबू बक्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास आए और कहा : क्या आप अपने साथी की बात सुनेंगे, उसका भ्रम यह है कि उसे रातों रात बैतुल मक़्दिस ले जाया गया। तो अबू बक्र ने कहा : क्या उन्हों ने ऐसी बात कही है ? तो लोगों ने कहा : हाँ। अबू बक्र ने कहा : यदि उन्हों ने ऐसी बात कही है तो उन्हों ने सच कहा है। लोगों ने कहा : क्या आप उनकी पुष्टि करते हैं कि वह रात को बैतुल मक़्दिस गए थे और सुबह होने से पहले वापस आ गए ? अबू बक्र ने उत्तर दिया : जी हाँ, मैं इससे भी बड़ी बात के अंदर उनकी पुष्टि करता हूँ, मैं सुबह या शाम में आसमान की ख़बर के बारे

में उनकी पुष्टि करता हूँ। तो इसी वजह से अबू बक्र का लक़ब सिद्दीक़ पड़ गया।'' इस हदीस की सनद सही है और बुखारी व मुस्लिम ने इसका उल्लेख नहीं किया है।

4- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुसरण और आज्ञापालन करना तथा आपके निर्देशों पर चलना :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आज्ञापालन, आपकी मोहब्बत का जीवित एवं सच्चा उदाहरण है, इसीलिए अल्लाह सर्वशक्तिमान ने फरमाया है कि :

﴿قُلْ إِن كُنتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ﴾
[آل عمران:٣١]

"कह दीजिए! अगर तुम अल्लाह से मोहब्बत करते हो तो मेरा आज्ञापालन करो, खुद अल्लाह तुम से मोहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर **देगा"**। (सूरत–आल इम्रान : 31)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुसरण करना, आपकी मोहब्बत की सबसे बड़ी निशानियों में से है :

अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُوْلِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِمَنْ كَانَ يَرْجُو اللَّهَ وَالْيَوْمَ الآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيْراً﴾ [الأحزاب: ٢١].

''निःसन्देह तुम्हारे लिए पैग़म्बर के जीवन में सर्वश्रेष्ठ आदर्श है, हर उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और क़ियामत के दिन की आशा रखता है और अल्लाह को अधिक याद करता है।'' (सूरतुल–अहज़ाब : 21)

अतः जो मोमिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मोहब्बत करता है, वही हर चीज़ के अंदर – इबादत में, नैतिकता में, व्यवहार में, मामलात में, और आचार में आपका अनुसरण करता है जैसाकि सम्मानित सहाबा किराम किया करते थे। नाफे से वर्णित है कि उन्हों ने कहा : यदि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुसरण करने में इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के स्वभाव को देखें तो आप कहेंगे कि वह पागल हैं।

5– आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रक्षा करना :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रक्षा और समर्थन करना, मोहब्बत व श्रद्धा की निशानियों में से एक निशानी है।

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रक्षा करने और दु:ख व सुख में जान व माल और बाल बच्चों को आप पर निछावर करने में सबसे सच्चे कार्य और सर्वश्रेष्ठ उदाहरण स्थापित किए हैं, जैसाकि अल्लाह सर्वशक्तिमान का फरमान है :

﴿لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا وَيَنْصُرُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ﴾ (الحشر:٨)

"(फ़ै का धन) उन ग़रीब मुहाजिरों के लिए है जो अपने घरों और धनों (संपत्तियों) से निकाल दिए गए हैं, वे अल्लाह की अनुकम्पा और प्रसन्नता ढूंढते हैं और अल्लाह की और उसके पैगंबर की मदद करते हैं, यही सच्चे लोग हैं।" (सूरतुल हश्र : 8).

तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की, आपकी मृत्यु के बाद, रक्षा करने के कई प्रकार हैं, जिनमें से कुछ का हम उल्लेख करते हैं :

1– आदमी के पास जो कुछ भी धन और जान है उसके द्वारा आपकी दावत और आपके संदेश का समर्थन करना . . .

2– आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत की : उसे याद करके, उसकी जाँच परख करके, उसका समर्थन करके और उसके बारे में संदेहों का खण्डन करके, रक्षा करना।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत को प्रकाशित करना और उसे दूसरों तक पहुँचाना, विशेषकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बहुत सी हदीसों में इसका आदेश दिया है, जैसाकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है : ''उपस्थित व्यक्ति अनुपस्थित व्यक्ति को (मेरी शिक्षा) पहुँचा दे।'' तथा आपका यह भी फरमान है : ''मेरी ओर से प्रचार करो चाहे वह एक आयत ही हो।''

चौथा : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मोहब्बत करने में सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की स्थिति :

सहाबा किराम ने अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ऐसी मोहब्बत की जिसका कोई उदाहरण नहीं है, यह मोहब्बत इस स्तर तक पहुँची हुई थी कि उन्हों ने अपनी जानों, अपने धनों, अपने बाल बच्चों और अपने माता पिता को निछावर कर दिया :

विभिन्न नमूने :

युवकों से : अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु का उस रात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बिस्तर पर सोना जिस रात मुशरेकीन ने आपकी हत्या करने का इरादा किया था।

अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा गया कि आप लोग पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किस तरह मोहब्बत करते थे ? तो उन्हों ने उत्तर दिया : अल्लाह की क़सम! वह हमारे निकट हमारे धनों, हमारे बच्चों, हमारे बापों, हमारी माताओं और प्यास की हालत में शीतल जल से भी अधिकतर प्यारे थे।

पुरूषों से : ज़ैद बिन दसिन्ना रज़ियल्लाहु अन्हु की कहानी :

इब्ने इसहाक़ कहते हैं : कुरैश का एक समूह एकत्रित हुआ जिसमें अबू सुफयान बिन हर्ब भी थे, तो अबू सुफयान ने उनसे जब उन्हें कत्ल करने के लिए लाया गया, पूछा : हे ज़ैद! मैं तुम्हें अल्लाह का वास्ता देकर कहता हूँ कि क्या तुम इस बात को पसंद करते हो कि इस समय मुहम्मद तुम्हारी

जगह पर हमारे पास होते कि हम उनकी गर्दन मार दें और तुम अपने परिवार में होते ? तो उन्हों ने उत्तर दिया : अल्लाह की क़सम! मैं तो यह बात भी पसंद नहीं करता कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उनकी उस जगह में जिसमें वह हैं एक कांटा भी चुभ जाए जिससे उन्हें कष्ट पहुँचे और मैं अपने परिवार में बैठा रहूँ !

कहते हैं कि अबू सुफयान ने कहा : मैं ने लोगों में किसी को किसी से इतना प्यार करते हुए नहीं देखा जिस तरह कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्यार करते थे।

तथा तबरानी ने आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से उल्लेख किया और उसे हसन करार दिया है कि उन्हों ने फरमाया : एक आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और कहा : ऐ अल्लाह के पैगंबर ! आप मेरे निकट मेरी जान से भी अधिक प्यारे हैं, तथा आप मेरे निकट मेरी औलाद से भी प्यारे हैं, और मैं अपने घर में होता हूँ तो जब आप को याद करता हूँ तो मुझे सब्र नहीं होता यहाँ तक कि मैं आकर आप

को देख लेता हूँ, और जब मैं अपनी मृत्यु और आपकी मृत्यु को याद करता हूँ तो मुझे पता चलता है कि जब आप जन्नत में जायेंगे तो आप ईश्दूतों के साथ ऊँचे पदों पर होंगे, और अगर मैं जन्नत में जाऊँगा तो मुझे डर है कि मैं आप को नहीं देख पाऊँगा। तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे कुछ उत्तर नहीं दिया यहाँ तक कि जिब्रील अलैहिस्सलाम इस आयत के साथ उतरे :

﴿وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَأُولَئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ وَحَسُنَ أُولَئِكَ رَفِيقًا﴾ [النساء : ٦٩]

"और जो भी अल्लाह और रसूल के हुक्म की पैरवी करे, वह उन लोगों के साथ होगा, जिन पर अल्लाह ने अपनी नेमतें की हैं, जैसे नबियों, सिद्दीक़ों, शहीदों और नेक लोगों के (साथ), और यह अच्छे साथी हैं।" (सूरतुन निसा : 69).

महिलाओं से :

इब्ने इसहाक़ ने सअद बिन अबी वक़्क़ास से रिवायत किया है कि उन्हों ने कहा : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बनी दीनार की एक महिला के पास से गुज़रे, जिसके पति, भाई

और पिता पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ उहुद की लड़ाई में काम आ गए थे, तो जब लोगों ने उसे इसकी सूचना दी तो उसने कहा : अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क्या हाल है ?

लोगों ने कहा : ऐ उम्मे फलाँ! वह खैरियत से हैं, वह अल्हम्दुलिल्लाह वैसे ही हैं जैसा कि आप चाहती हैं।

उसने कहा : मुझे दिखाओ ताकि मैं उनका दर्शन करूँ।

कहते हैं : तो उसके लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ इशारा किया गया यहाँ तक कि उसने आपको देख लिया, फिर उसने कहा : आपके बाद हर आपदा तुच्छ है।

पाँचवाँ : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मोहब्बत का प्रतिफल

बुखारी ने अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि उन्हों ने कहा : एक दीहाती ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा : क़ियामत कब है ? तो अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उससे कहा : "तू ने उसके लिए क्या तैयारी की है ?" उसने कहा : अल्लाह और

उसके रसूल की मोहब्बत। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''तू उसके साथ होगा जिससे तुझे मोहब्बत है।'' अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं : तो मैं ने देखा कि मुसलमानों को इस्लाम लाने के बाद किसी चीज़ से इतनी प्रसन्नता नहीं हुई जितनी इस बात से हुई। तो हम अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मोहब्बत करते हैं और आपके के अमल करने की तरह अमल करने की क्षमता नहीं रखते हैं, तो जब हम आपके साथ होंगे तो यह हमारे लिए काफी है।